मैथिली गजल संग्रह

मौनक देहरिपर

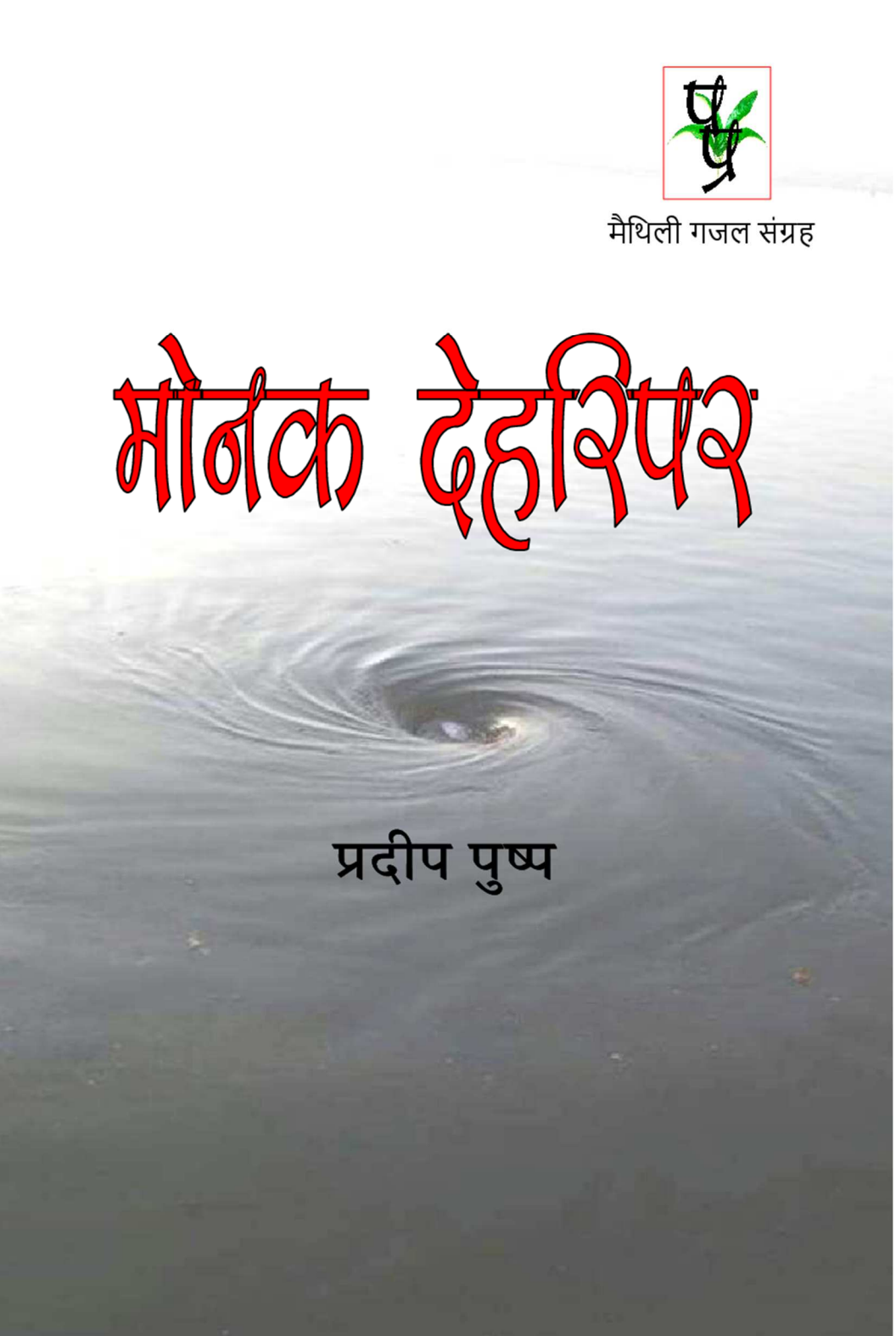

प्रदीप पुष्प

मोनक देहरिपर

प्रदीप पुष्प

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

ISBN : 978-93-88811-52-1

Published by : Pallavi Parkashan
Tulsi Bhawan, J.L.Nehru Marg, Ward No. 06, Nirmali, District- Supaul, Bihar : 847452
website : http://pallavipublication.blogspot.com
e-mail : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
Mobile : 6200635563, 9931654742

Price : 200/-
Copyright © Author (Sh. Pradeep Pushpa)
First published 2020

Typeset and Printed By : Manav Arts, Nirmali (Supaul). Pin : 847452

Monak Dehairpar (मोनक देहरिपर)
Anthology of Maithili Gazal by Sh. Pradeep Pushpa

All rights reserved. No Part of this publication may be reproducted or transmitted, in any form or by any means, without prior permission of the author.

समर्पण

...पहिल पुष्पांजलि समर्पित अछि
प्रातः स्मरणीय मैंया आ बाबाकेँ,
जनिक स्नेह-प्रेमक बलें एखनहु
फड़ि-फुला रहल छी हम...

-प्रदीप पुष्प

गजल पुष्प

प्रदीप पुष्प जीक प्रस्तुत गजल संग्रहक भूमिकाक शुरुआतमे हम दू टा बात कहब पहिल जे जखन कोनो पत्रिकामे ई पढ़बाक लेल भेटए जे "हम दुष्यंत कुमार सन कथ्य बला गजलक इस्कूलक अनुगामी छी" तखन ओहि लेखक नाम देखू पत्रिकाक संपादकक नाम देखू आ तकर बाद सीधे हुनका सभकेँ प्रणाम कऽ अपन घर घुरि आबि जाउ। कारण जखन अहाँ नामे देखबै तखने पता लागि जाएत जे ई सभ बिना पढ़ने बाजए बला लोक सभ छथि आ हुनका लग अपन उर्जा खत्म करबासँ नीक जे अपन कनियाँ वा अपन परिवारक लोककेँ एक कप चाह बना कऽ पिया दियौन। ओहि लेखक वा संपादकसँ बहस करबासँ बेसी नीक इएह काज रहत। दुष्यंत कुमारजीसँ पहिने सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला" गजलमे एलाह आ कहला--

भेद कुल खुल जाए वह सूरत हमारे दिल में है
देश को मिल जाए जो पूँजी तुम्हारी मिल में है

मतला (मने पहिल शेर)क मात्राक्रम अछि-- 2122+2122+2122+212 आ कथ्य पूँजी एवं मिल अछि। तकर बाद दुष्यंत कुमार--

हो गई है / पीर पर्वत /सी पिघलनी / चाहिए,
इस हिमालय / से कोई गं / गा निकलनी / चाहिए।

अइ शेरक मात्राक्रम 2122 / 2122 / 2122 / 212 एकर कथ्यक विषयमे हम नै कहब कारण कथ्यक अनुमागी सभ एही इस्कूलसँ संबंध रखने छथि। आब अदम गोंडवी--

भूख के एह / सास को शे / रोसुख़न तक /ले चलो
या अदब को / मुफ़लिसों की / अंजुमन तक /ले चलो

अइ शेरक मात्राक्रम 2122 / 2122 / 2122 / 212 अछि। आ कथ्य तँ कथ्ये छै। आब हसरत मोहानी--

चुपके चुपके रात दिन आँसू बहाना याद है
हमको अब तक आशिक़ी का वो ज़माना याद है

अइ शेरक मात्राक्रम 2122+2122+2122+212 अछि आ ई गजल केकारा ने मोन हेतै। बात साहित्ये नै फिल्मक गीत सेहो छंदक पालन करैए--

तेरे प्यार का आसरा चाहता हूँ
वफ़ा कर रहा हूँ वफ़ा चाहता हूँ

एकर बहर 122 122 122 122 अछि। एही बहरक गीत अछि-- "बहुत देर से दर पे आँखें लगी थी, हुज़ुर आते-आते बहुत देर कर दी"। तेनाहिते--

खुश रहे तू सदा ये दुआ है मेरी
बेवफ़ा ही सही दिलरुबा है मेरी

एहि गीतक बहर 212 212 212 212 अछि। बहुत उदाहरण अछि कतेक देब तँइ एहने किछु उदाहरण आलोकमे हमर दोसर बात जे छंद आ कथ्य कहियो एक दोसरक विरोधी नै रहलै। छंद ओ कथ्य काव्यक मर्यादा छै जे जतेक दूर धरि निमाहि सकता से ततेक नीक कहेता। हमर कहब जे लोकनि काव्यमे खाली छंदक महत्व दै छथि से पुरुषसँ पुरुषक बियाह करा वंशवृद्धिक उपाय करै छथि तेनाहिते जे काव्यमे खाली

कथ्यक महत्व दै छथि से स्त्रीक बियाह स्त्रीसँ करबा कऽ वंशवृद्धिक उपाय करै छथि। दूनू उपायसँ वंशवृद्धि हेतै वा नै हेतै से अहूँ सभ बूझि सकै छियै। बेसी हँसी तखन अबैत छै जखन कोनो अराजक गजलकार गजलमे प्रचलित छूट लेबाक बात कऽ गजलकेँ छंदमुक्त करबाक बात करै छथि। सभकेँ बूझि जेबाक चाही जे छूटो एक हदे धरि भेटै छै गजलमे आ सेहो ओकरे जे कि अनुशासित छै। जे अनुशासन नै मानैए एवं अराजक छै तकरा लेल तँ सौ प्रतिशत छूटे-छूट।

हम प्रदीप पुष्पजीक गजल यात्राक पहिल डेगसँ लऽ कऽ एखन धरि संग छी तँइ बेसी विश्वासक संग कहि रहल छी जे पुष्पजी काव्यक मर्यादाकेँ नीक जकाँ निमाहबाक प्रयास केलाह अछि। एहन नै जे हिनकासँ गलती नै भेल छनि मुदा गलती भऽ जाएब अलग बात छै आ कोनो चीजकेँ खारिज कऽ देब अलग बात छै। जाहि-जाहि ठाम पुष्पजीकेँ अपन गलती बुझबामे एलनि से तात्काल ओ ठीक केलाह। बहुत संभव जे तकर बादो एहि संग्रहमे पाठक-आलोचककेँ कोनो गलती भेटि जाइन आ से गलती ओ ताकि लेखककेँ सूचित कऽ हुनकर परिमार्जनमे ओ सभ सहायक हेताह से आशा अछि।

छंद ओ कथ्यक मिलान देखैत जँ हम पुष्पजीक गजलकेँ देखी तँ मैथिली गजलक भविष्य बहुत नीक देखाइ पड़ैए। एकटा बात साफ कऽ दी जे हम जखन मैथिली गजलक भविष्य कहै छियै तखन ओकर मतलब लगभग सौ साल बाद होइत छै। उर्दू गजलकेँ सेहो परिपक्व हेबामे लगभग तीन सौ साल लगलै। आ से तखन जखन कि ओहि भाषा लग छंद ओ कथ्यक मिलान करए बला बहुसंख्यक छलै मुदा मैथिलीमे तँ सभ क्रांतिएवीर छथि। 1905 सँ लऽ कऽ एखन धरि जे कियो मैथिलीमे बहरयुक्त मुदा भावपूर्ण गजल लिखला से मैथिली गजलक भवनमे न्यों छथि आ एखनसँ लऽ कऽ लगभग 2040 धरि जे कियो बहरयुक्त मुदा भावपूर्ण गजल लिखता तिनको न्यों मानल जेतनि। बहुत संभव जे एखनुक किछु युवा गजलकार 2040 धरि मैथिली गजल भवनक

मुख्यद्वार बनि जाथि। हमरा हिसाबें पुष्पजी एहन छथि जिनकामे न्यों बनबाक साहस सेहो छनि आ मुख्यद्वार बनबाक काबिलियत सेहो छनि आ तकर प्रमाण एही संग्रहमे आएल किछु पाँति ओ शेर अछि जकरा हम निच्चा दऽ रहल छी--

"भाषण आमो पर दै छै
थुर्री लताम बला लोक"

"भूत गबैत रहतै
धैम नचैत रहतै"

"खोलू अनकर कच्चा चिट्ठा
झाँपि अपन घोटाला राखू"

"अवसरपर पुष्प काट एना
विषधरकेँ आब मात कर तूँ"

आ एहने सन बहुत पाँति ओ शेर अछि। एहि गजल संग्रहमे किछु गजल सरल वार्णिक बहरमे अछि जे कि बहुत पहिने सभकेँ छंद दिस आकृष्ट करबा लेल गजेन्द्र ठाकुरजी द्वारा प्रचलित कएल गेल छल आ मैथिली गजलकेँ एहि बहरसँ बहुत फायदा भेलै ओना गजलक मूल बहर वर्णिक बहर अछि मुदा सरल वार्णिकक अभ्याससँ गजल लिखब सरल भऽ जाइत छै। एहि संग्रहक किछु गजलमे नीक बाल गजल नुकाएल छै। उम्मेद अछि जे भविष्यमे पुष्पजीक बाल रंग सेहो देखबामे आएत आ हम सभ ताही आशाक संग समय कटबाक प्रयास कऽ रहल छी।

आशीष अनचिन्हार

अप्पन किछु बात

अपन पहिल गजल संग्रह अहाँ सभक सोझामे उपस्थित करैत बड्ड प्रसन्नता भऽ रहल अछि। एहि पोथीकेँ एबामे बहुत समय लागि गेल। लिखब हम जहन हाई स्कूलक विद्यार्थी रही तहिये शुरू कऽ देने रही। घरमे शुरुए-सँ साहित्य आ संगीतक माहौल रहल। हमर व्यक्तित्वकेँ साहित्य संगीत अनुरागी बनाबय बला हमर प्रथम गुरु हमर बाबा छथि। इस्कूलमे हमरा साहित्यसँ परिचित करेबाक काज केलनि आदरणीय सर्व श्री कृष्णमोहन झा (योगीबाबू, भभाम), जयनन्दन झा (हिंदी शिक्षक), बासुकीनाथ झा (ननौर)। आदरणीय अरुण सर अलपुराक उपकार जीवन भरि कहियो नहि बिसरि सकब। हमरा प्रो. कमर हुसैन जी सेहो बड्ड मदद केलन्हि।

साहित्य संगीत सँ उत्तरोत्तर प्रेम बढ़ैत गेल। गीत लिखय लगलौं। बहुतो रास गीत सभक कैसेट बनल। नीक-बेजाय सभ तरहक। मुदा, सन्तुष्टि नहि भेटय। मन हुअए जे किछु नव आ सार्थक काज करी। धीरे धीरे गजल दिस झुकाव भेल। खोजि-खोजि कऽ गजल पढ़य लगलौं। गजलकेर दुनियाँक प्रसिद्ध नाओं हम आब जानि गेल रही। ई 2003-2005 केर समय छल। इन्टरनेट नै छल। गाममे दिन भरि ट्यूशन - कोचिंग चलाबी आ रातिकेँ कान्तिपुर एफ.एम.सँ हिन्दी-उर्दू गजल सुनी। गजल पढ़ब आ सुनब नीक लागय लागल। शेर सीधे करेजपर कोना असरि करैत छैक से बुझबामे आबि गेल। मुदा, तहिया गजलमे सेहो नियम होइत छैक, व्याकरण होइत छैक से नै बुझल छल। बहर केर दुनियासँ बहुत अनजान रही। तखनो 2008मे अपन भावना गजल कहि (जे कि वस्तुत: गजल नै रहय) पहिल बेरि कागज पर उतारलौं-

“दिल जँ नजरिक शिकार भऽ जाय
आगू असगरे जियब पहाड़ भऽ जाय
केश ओझराकऽ जहन ताकै सजनिया
मास जेठक जेना आषाढ़ भऽ जाय”

2012 मे जहन हमरा लग मोबाइलक माध्यमे इन्टरनेट उपलब्ध भेल तहन हम गजलक शास्त्रसँ परिचित भेलौं। तइ बीचमे भाइ उमेश मण्डलजी हमरा गामपर आबि लिखबाक लेल आग्रह केलथि। हुनक आग्रह संजीविनी जकाँ काज केलक आ हम लिखि-लिखि ‘विदेह ई-चौबटिया’पर पोस्ट करय लगलौं। आदरणीय गजेन्द्र ठाकुरजी, आशीष अनचिन्हारजी, अमित मिश्रजी, राजीव रंजन मिश्रजी, कुंदन कर्णजी, ओम प्रकाश झाजी जकाँ व्याकरण युक्त गजलकार सभक रचना पढ़य लगलौं। आशीष अनचिन्हारजी हमर गजलकेँ बहरपर आनयमे बहुत सहयोग केने छथि। हुनका अशेष आभार।

हमर अइ पोथीमे सभ तरहक रचना अछि। किछु आरम्भक गजल जे सरल वार्णिक अछि जहिया हम बहर रचना सिखब शुरू केने रही। तकरा बाद बेसी गजल अरबी बहर आधारित अछि।

सम्भव अछि जे कोनो रचनामे अशुद्धि होय, बहरमे दोष होय, भावमे तारतम्य नै होय, ताहि लेल हमरा अपने विद्वतजन माफ करब आ हमरा हमर गलतीकेँ अवश्य जना देब ताकि हम ओकर परिमार्जन कऽ सकी।

अहाँ सभक समक्ष अइ पोथी केँ आनयमे बहुतो लोकक प्रोत्साहन स्मरण भऽ रहल अछि। सर्व श्री कवि दिलीप कुमार झा (मधुबनी), नारायण झा (रहुआ संग्राम) राजीव रंजन झा (समस्तीपुर) अमित मिश्र (समस्तीपुर) लोकनिकेँ बहुत आभार प्रकट करब। भाइ मलय नाथ मण्डन, मैथिल प्रशान्त, अवधेश झा (कवि) आनन्द मोहन झा (हररी) केर स्नेहिल उत्साहवर्धन संजीवनी बनल।

परिवारमे माँ-पिताजीक आशीर्वाद सदति प्रेरित करैत रहल अछि। पत्नी नीलू पुष्प हमर गजलक पहिल श्रोता रहैत छथि। हुनक सहयोग अमूल्य।

हमर किछु छात्र-छात्रा हमर सहित्यिक गतिविधिमे बड्डु सहयोग केने छथि। हुनका लोकनिकेँ बहुत बहुत धन्यवाद। पाण्डुलिपि तैयार करबामे जया श्रीति केर अथक परिश्रम सेहो सराहनीय रहल। जयाकेँ विशेष धन्यवाद।

अइ पोथीक निर्माण बिनु उमेश मण्डलजीक सभतरहेँ सहयोगक सम्भव नै छल। भाइ उमेशजी आ पल्लवी प्रकाशनकेँ हमर सादर आभार।

अन्तमे-

पछुआरक भीतपर पाड़ल जेना चीत हम
के गेतै आब हमरा छी निर्गुनिया गीत हम

-प्रदीप पुष्प

5 मार्च 2020
ननौर, मधुबनी

अनुक्रम-

गजल- 1/21
गजल- 2/22
गजल- 3/23
गजल- 4/24
गजल- 5/25
गजल- 6/26
गजल- 7/27
गजल- 8/28
गजल- 9/29
गजल- 10/30
गजल- 11/31
गजल- 12/32
गजल- 13/33
गजल- 14/34
गजल- 15/35
गजल- 16/36
गजल- 17/37
गजल- 18/38
गजल- 19/39

गजल- 20/40

गजल- 21/41

गजल- 22/42

गजल- 23/43

गजल- 24/44

गजल- 25/45

गजल- 26/47

गजल- 27/48

गजल- 28/49

गजल- 29/50

गजल- 30/51

गजल- 31/52

गजल- 32/53

गजल- 33/54

गजल- 34/55

गजल- 35/56

गजल- 36/57

गजल- 37/58

गजल- 38/59

गजल- 39/60

गजल- 40/61

गजल- 41/62

गजल- 42/63

गजल- 43/64
गजल- 44/65
गजल- 45/66
गजल- 46/67
गजल- 47/68
गजल- 48/69
गजल- 49/70
गजल- 50/71
गजल- 51/72
गजल- 52/73
गजल- 53/74
गजल- 54/75
गजल- 55/76
गजल- 56/77
गजल- 57/78
गजल- 58/79
गजल- 59/80
गजल- 60/81
गजल- 61/82
गजल- 62/83
गजल- 63/84
गजल- 64/85
गजल- 65/86

गजल- 66/87
गजल- 67/88
गजल- 68/89
गजल- 69/90
गजल- 70/91
गजल- 71/92
गजल- 72/93
गजल- 73/94
गजल- 74/95
गजल- 75/96
गजल- 76/97
गजल- 77/98
गजल- 78/99
गजल- 79/100
गजल- 80/101

गुदगुदौने जे रहियौ, की नहि मोन छौ?

हम हँसौने जे रहियौ,की नहि मोन छौ?

हँ, सुखक क्षण हेतौ सत्ते बिसरा गेल,

हम कनौने जे रहियौ, की नहि मोन छौ?

-प्रदीप पुष्प

गजल- 1

लगलेमे हीया हारि लेबै हम
छातीमे मुक्का मारि लेबै हम

हमरा नै मिललै चान गगनक तेँ
करबै की डिबिये बारि लेबै हम

खगता कनिको नै दऽर दियादक आब
आँगनमे अमती गाड़ि लेबै हम

कलपै बाजै बेटी तिलक कारण
डिब्बा पेट्रोलक ढारि लेबै हम

जेबीमे रखने छी प्रशासन हम
क्यो एगो लेतै चारि लेबै हम ❑

(2222221222 सभ पाँतिमे। तेसर शेरक अन्तिम लघु छूट तौर पर लेल गेल अछि)

गजल- 2

फ्रेम टांगल छै चित्र उखाड़ि देलौं
कानि भरि मोन तोरा बिसारि देलौं

पएर ठमकल तोहर दलान लऽग जे
छाती पाथर कऽ डेग ससारि देलौं

आस छल जिनगी रचबै गजल जेना
बहर कठिन छै हम हिया हारि देलौं

देखल नै गेल पराजय तोहर तेँ
हम अपने अपनाकेँ बजारि देलौं

तूँ पीठेमे चक्कू भोकबेँ कते
तोरा लेल छाती उघारि देलौं

चान धरि पहुँचब नै लिखल छल हमरा
मोनकेँ हम सीढ़ीसँ उतारि देलौं ❑

(2222222222 सभ पाँतिमे। दूटा अलग अलग ह्रस्वकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि।)

गजल- 3

हम लिखै छी लोक लए विद्वान लए नय
हम गबै छी गाम लए जजमान लए नय

पेटमे कूदत मूस तहन पागे करतय की
हम खटै छी भूख लए सम्मान लए नय

हम जनै छी देव हमर जेबीक लचार
हम पुजै छी भक्ति लए वरदान लए नय

छैक हमरो लोभ अपन बनि जाइ अहाँक
हम तकै छी नेह लए पकवान लए नय

भूमिका छै छोट मुदा नमहर सपना छै
हम कनै छी टोल लए खनदान लए नय ❑

(2122 2112 2211 22 सभ पाँतिमे। तेसर आ चारिम शेरक पहिल पाँतिक अन्तिम ह्रस्वकेँ दीर्घ मानल गेल अछि)

गजल- 4

तपलौं जे रौद जेठक निखरि गेलौं हम
एत्ते चललौं कि रस्ते बिसरि गेलौं हम

मजरल हमहूँ रही फागुनक देहरिपर
पी लेलौं कीटनाशी झखरि गेलौं हम

बदलल छै लोक घऽर एत्तऽ नइ छै हम्मर
पाछू छै गाम आगू ससरि गेलौं हम

छाती हमरो रहै निस्सने पाथर सन
दोस्ती शीशाक केलौं भहरि गेलौं हम

नै केओ मीत नै प्रेम छुच्छे टाका
की भेटल आबि दिल्ली ठहरि गेलौं हम ❑

(222212212222 सभ पाँतिमे)

गजल- 5

टुकटुका रहल जिनगी
सुगबुगा रहल जिनगी

गीत फेर अचिआपर
गुनगुना रहल जिनगी

तेल बिनु डिबिया सन
टिमटिमा रहल जिनगी

नोरकेर बरखामे
उजगुजा रहल जिनगी

सून भेल आँगनमे
लटपटा रहल जिनगी ❑

(212 12 22 सभ पाँतिमे)

गजल- 6

बीतलाहा बाटमे हेरा रहल छी
ऐंठ छी हम चाह तेँ सेरा रहल छी

पेरलक दैबा भऽ तेना ने कसैया
मेहमे बऽरदे जकाँ पेरा रहल छी

देह भेलै आब अनमन टाँट सनठी
आगि लागल ऊक सन फेरा रहल छी

मीत मुसकी बीच कननी हैत अलगे
नोर सुख दुखकेर हम बेरा रहल छी

मन भेलै भोज करितौं गाम भरिक
'पुष्प' गोलक बान्हमे घेरा रहल छी ❑

(2122 2122 2122 सभ पाँतिमे, मकताक पहिल पाँतिमे अन्तिम लघुकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि)

गजल- 7

गमकैत घाम बला लोक
चमकैत चाम बला लोक

भाषण आमो पर दै छै
थुर्री लताम बला लोक

बाँटै दरद सगरो खूब
ई झंडु बाम बला लोक

मौंसो केर हाट लगबै
गाँधीक गाम बला लोक

करतै उद्धार मिथिलाक
दिल्ली असाम बला लोक ❑

(2222222 सभ पाँतिमे। दूटा अलग अलग लघुकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि)

गजल- 8

खेत बेचि कऽ टाकाक ओरियान करतै
माथ पर बेटी छै कन्यादान करतै

जे रातिमे पी कऽ केने छल हो-हल्ला
वैह भोरे नशा-मुक्ति अभियान करतै

जकरा छै नइ बाँचल जोत एको धूर
तकरा बाढ़ि -रौदी की नुकसान करतै

जे अपने कात भऽ बैसि गेल अछोप बनि
ओकरा बारीक किए अपमान करतै

ओ नेता छै सत्ताकेर बड्ड भूखल
बाँटि कऽ देश हिन्दु आ मुसलमान करतै

आइ पार्थक जयघोष पर नाचै दुनियाँ
समय राधेयक सेहो गुणगान करतै ❑

(22222222222सभ पाँतिमे। दूटा अलग-अलग ह्रस्वकेँ दीर्घ मानल गेल अछि)

गजल- 9

भाषा भिन्ने भिन्न बजै छै ई कोन गाम छै
केओ केकरो नै चिन्है छै ई कोन गाम छै

नै तरुआ तिलकोर नै दही चूड़ा गमकि रहल
गन्ध चाउमिनकेर अबै छै ई कोन गाम छै

नै सोहर नै लगनी आ छै नै नचारीक धुन
सगरो मात्र डीजे बजै छै ई कोन गाम छै

बूढ़ माए बापकेँ कोन बेटा रखतै संगे
धुर! सभ सबहक मूँह तकै छै ई कोन गाम छै

सून छै दलान आ भकोभम्म भेल आँगन घर
चढ़ि कऽ सोफा कुक्कुर हँसै छै ई कोन गाम छै ❑

(2222222222222 सभ पाँतिमे। दूटा अलग अलग ह्रस्वकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि)

गजल- 10

दीप सभटा मिझा गेलै तोहर मिलनक आस केर
तैयो भरि कऽ रखने छी टाड़ा अपन विश्वास केर

फूँकैत रहै जे हेमनि धरि शंख जनवादी भेल
आइ ओ नटुआ भेल छै सोझामे किछु खास केर

नव रहै व्यापार हमर सुगन्धकेर शिकारी रही
बूझि गुलाब चूमि लेलौं तेँ ठोर हम पलास केर

जे सोझा साष्टांग करै पान करै चरणोदककेँ
पीठ पाछू ओ गाबै खिस्सा हमर उपहास केर

भेँट अन्तिम कऽ ले आबो प्राण छूटि जेतैक हमर
जा रहल पुष्प साड़ा सपना लेने रनिवास केर ❑

(22222222222222 सभ पाँतिमे, दूटा अलग अलग ह्रस्वकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि)

गजल- 11

दोसरक गीत उगबै अछि चान मीता
हमर गजलो गबै भूखक गान मीता

आब रूदल बऽनब ने हम गऽछब कहियो
जरल पेटसँ उठै ने सुर तान मीता

भेल बटुआसँ तगमाकेँ नीक दोस्ती
बिन टका छी सभा मध्ये आन मीता

जैह देबै अहाँ हम रखबै हुलसिकेँ
गाय बूढ़ो खपै विप्र- दान मीता

पाँतमे हम अछोपक छी भोज खाइत
'पुष्प'केँ नइ फिकर आ ने मान मीता ❑

(2122 1222 2122 सभ पाँतिमे)

गजल- 12

शब्द छौ भाव छौ अलंकार छौ तोर आँखि
पिपनी तऽर साहित्य-संसार छौ तोर आँखि

मन शान्तनु भेल ठमकै तोरे लग जा-जा कऽ
की नव सुरसरिक अवतार छौ तोर आँखि

जेना कोनो दरिद्रकेँ भेटल राज-पाट
तहिना ऐ जीवनक आधार छौ तोर आँखि

की कोना कथी करवन ककरा किए सन बहुत
सद्य सजीव प्रश्नक बौछार छौ तोर आँखि

छै विधाता हाथमे बाँचल बड्ड कौशल-कला
ऐ शाश्वत तथ्यकेर प्रचार छौ तोर आँखि ❑

(222222222222- बहरे- मीर)

गजल- 13

उजड़ल मनक गाम बसाबऽ पड़त एक दिन
जाइ छी तँ जाऊ फेर आबऽ पड़त एक दिन

सनेश हमर घुमा देलौं तकर कष्ट नै अछि
मुदा देल सिनेह सेहो घुमाबऽ पड़त एक दिन

मनुक्ख रहैत ईश्वर जँ बनबाक लौल करब
शोणित लालसँ कारी बनाबऽ पड़त एक दिन

जँ दूध आ पानिक भेद नै कऽ सकलौं अहाँ
तहन उल्लूसँ संसद चलाबऽ पड़त एक दिन

हम रहैत छी श्मशानमे भूत- प्रेत संग
संग पाबऽ लेल देह जराबऽ पड़त एक दिन ❑

(222222222222- बहरे-मीर)

गजल- 14

दर्दक दबाइमे भाव उपचार भेल
प्रेमक पीड़ तेँ गजल भऽ बहार भेल

जतै दीर्घ लघु केर गाड़ी रूकल ओतै
रूक्णक चौक आ बहरक बजार भेल

अन्त नीक सऽब नीक नीक इ आदर्श तेँ
मतलाक अन्तमे रदीफ संस्कार भेल

रूचिगर सुआद होइ शेरक भोजमे
छंदक सँचारमे काफिया अँचार भेल

पन्नाक भीड़मे के कतय हेरा जायत
तेँ मोन पाड़ैले मकता अवतार भेल

अदब आँगनमे नव घऽर ठाढ़ होऊ
गजलक गजल तेँ 'पुष्प' विचार भेल ❑

(सरल वार्णिक बहर, 15 वर्ण सभ पाँतिमे)

गजल- 15

अपनेसँ कान्ह पर अप्पन लहास लेने छी
जिनगी ई भूत -बँगला हम बास लेने छी

तूँ जाम दे जहर दे हमरा नै फिकर अछि
हम आँखि मूनि हाथ फेर गिलास लेने छी

वैह बीच सभामे बेईमान कहि देलक
जकरा एकाबन दऽ हम उनचास लेने छी

बनि लंकेश कतेक अप्पन घेँट काटू हम
भेल शिव छथि आन्हर ई विश्वास लेने छी

गजल नोरक मोसि भरि कहैत रहब 'पुष्प' हम
अहाँ सुनबै जरूर हम ई आस लेने छी ❑

(222222222222 सभ पाँतिमे। बहरे- मीर)

गजल- 16

हेतै जहिया इजोर हम मोन पड़बौ
लगतौ तोरा बकोर हम मोन पड़बौ

तोरा पाछू चलैत चुप्पेसँ केओ
धरतौ जहने पछोड़ हम मोन पड़बौ

फेरो केओ निहारि चन्दा जकाँ मुख
हेतौ तोहर चकोर हम मोन पड़बौ

जे तोरा देखि भोजमे खूब रस लऽ कऽ
बनतौ डलना चटोर हम मोन पड़बौ

बेदीतर बैसि मंत्र पढ़ऽ लेल बहिना
पहिरेतौ जे पटोर हम मोन पड़बौ ❑

(222212122122 सभ पाँतिमे)

गजल- 17

राति सपना देखि गमेलौं तँ की भेटल
नोर हमरा लेल खसेलौं तँ की भेटल

फेर आपस हैब हमर नइ रहय सम्भव
नैन बाटे बीच लगेलौं तँ की भेटल

जाति सभ दिन माथ पर मारने पलथा
टोलकेँ टोलेसँ सटेलौं तँ की भेटल

छी अहाँ पपिआह तँ की ठोप आ चानन
मास दिन गंगे जँ नहेलौं तँ की भेटल

चित्र सभ ठाँ टांगल यात्रीक घर घरमे
गीत बलचनमाक सुनेलौं तँ की भेटल

प्राण काया केर बिना नइ रहय कखनो
बिनु बहर गजले जँ कहेलौं तँ की भेटल ❑

(2122211221222 सभ पाँतिमे)

गजल- 18

किछु रौदीमे किछु दाहीमे
बाँकी जरतै अगराहीमे

सत्तैर बरखक भेलै चिलका
एतै कहिया फगुनाहीमे

धी माइक अनुपम नाता ई
दुन्नू डुबलै पुरनाहीमे

जे जत्ते बड़का लीडर छै
से तत्ते बेपरबाहीमे

मुइने भेटत अनुदानो ता
भुखले नारा बहबाहीमे

उपरे उप्पर दौरा करिहेँ
नइ जइहेँ कोसी मरखाहीमे ❑

(22222222 सभ पाँतिमे। दूटा अलग-अलग ह्रस्वकेँ दीर्घ मानल गेल अछि)

गजल- 19

अनठौने छी मुदा अनजान नै छी
घरैये लोक छी मेहमान नै छी

अहाँक मुँह देखि मूँगबा बूझल अछि
चुप्प भेल छी तेँ कि निष्प्राण नै छी

अहाँक कहलासँ राति- दिन नै हेतै
अहूँ डिबिये छी कुनु दिनमान नै छी

सुविधाक हिसाबसँ मानक नै रचियौ
यौ अहूँ सभ दिनक पहलवान नै छी

ओ नै डूबत जे हेलब जनैत छै
अहाँ खत्ताक पानि छी बलान नै छी ❑

(बहरे- मीर)

गजल- 20

के सुनेतै गरीबक गान कह
के बढेतै गुदड़िया शान कह

मोसि बेसी तँ उजरे छै तहन
पाठ हेतै केना करिछान कह

गीत गिरहत बला सुनलौं बहुत
बालचनमाक निज अभिमान कह

जेहने छै घँसल आ की सही
तूँ अठन्नीक निज सम्मान कह

देलकै नाम कवि कोकिल बना
ओइ उगनाक तूँ गुणगान कह

ले कलम हाथ चल संगे निकल
पुष्प मिथिलाक नव अभियान कह ❑

(212 212 2212 सभ पाँतिमे)

गजल- 21

टाटक घर छी बिहाड़ि सुनि डेरायल छी
गगनक चान छी इजोरसँ चोटायल छी

नै आदर नै सत्कार नै कुशल पूछै
पैघ लोकक दरबारमे चलि आएल छी

सगरो वैर आ हिंसा छै प्रपञ्च हँसैत
अपनहिँ घरमे रहितो हम औनाएल छी

शत्रुक गप्प पर चलितौं तँ पहुँचल रहितौं
मित्रक बाट धऽ चललौं तेँ भुतिआएल छी

पछता रोपल भाग्यक नै ई दोष हमर
माघी फूल रही जेठमे फुलाएल छी ❑

(बहरे-मीर)

गजल- 22

कने हिन्दू कने मुसलमानक देश
लड़ैत दियाद जकाँ भगवानक देश

हरियर छै जाति धरम नस्लक खेती
उपटि गेलै सुच्चा इंसानक देश

प्राण अखनो भात बिनु छूटै तैयो
केस छेनाक लड़ै मिष्ठान्नक देश

सुनतै के सगरो हिचुकी जौं उठतै
छै कान बिनु आरती अजानक देश

पुरना गेलै टोपी-टीका तँ आब
आत्मा बेचि दै वेद पुराणक देश ❑

(2222222222 सभ पाँतिमे। बहरे मीर)

गजल- 23

लोक मरैत रहतै
तंत्र चलैत रहतै

तोप हँसैत रहतै
पेन कनैत रहतै

भात सधैत रहतै
बात बढ़ैत रहतै

पेट घटैत रहतै
धोधि बढ़ैत रहतै

बान्ह बनैत रहतै
बाढ़ि अबैत रहतै

भूत गबैत रहतै
धैम नचैत रहतै ❑

(21 121 22 सभ पाँतिमे)

गजल- 24

स्नेहक सम्मान माए छै
दैबक वरदान माए छै

छै डूबल जोतमे दुनियाँ
सय सय दिनमान माए छै

कोनो पूजा कथी लेल
पहिलुक भगवान माए छै

जे हेरत बाट जगले ओ
सबहक अनुमान माए छै

जितिया छठि दशहरा संगे
माहे रमजान माए छै

जे हम्मर पेट भरलक ओ
भूखल खरिहान माए छै ❑

(22221222 सभ पाँतिमे। तेसर शेरक अन्तिम लघु दीर्घ मानल अछि)

गजल- 25

अजान बौक
भसान बौक

नचैत लाश
मसान बौक

मरैत गाछ
मचान बौक

सधैत पाय
मिलान बौक

खटैत लोक
दलान बौक

भरैत पेट
थकान बौक

बहैत गाम
निशान बौक

कटैत गाय
बथान बौक

बढ़ैत दाम
निदान बौक

जरैत खेत
किसान बौक ❑

(121 21 सभ पाँतिमे)

गजल- 26

कने ध्यान एम्हर आनल जाए
घामक जाति कोन मानल जाए

छै छाल्ही-दूध धोधिबला लेल
भूखल लेल सत्तु सानल जाए

चन्दा-चुटकी फेरो बटोरबै
हँ यौ तेँ कीर्तन ठानल जाए

सभा मध्य जे उचित गप्प कहता
हुनका पंचे नै मानल जाए

छागर-बकरी देने छै धरना
बाघ हमर नेता गानल जाए ❑

(222222222, बहरे मीर)

गजल- 27

प्रेमक डोर की गजल नइ
जगले भोर की गजल नइ

टटका फूल सन नरम ई
पातर ठोर की गजल नइ

चानी सोन केर चमक सन
देहक पोर की गजल नइ

मातल पैघ पैघ नैनक
कारी कोर की गजल नइ

तोहर मीठ मीठ वचनक
मिसरी बोर की गजल नइ

तोरा लेल जे बहल ओ
पुष्पक नोर की गजल नइ ❑

(2221 2122 सभ पाँतिमे)

गजल- 28

अपन किरदानी पैघ अनकर छोट लगैए
बजलै केओ उचित कने बड़ चोट लगैए

जानै के नै कर्म ककर छै श्वानक जगमे
किदैन चाटि कऽ बाजै जे अखरोट लगैए

गन्ध अबै छै सत्ताक किए देहसँ धर्मक
मंत्री जकाँ बाबाजीक लंगोट लगैए

ककर चोरेलकै धन ककर जमीन छिनलकै
छऽल जे दुब्बर लोक आइ बड़ मोट लगैए

होइ पाठ नित धर्म- अधर्मक नीतिक तैयो
देखि जगत व्यवहार हिय कचोट लगैए

खन दहिना खन बामा होइत छथि नेताजी
कुरता पजामा नव मन लोटपोट लगैए ❑

(222222222222 सभ पाँतिमे। बहरे- मीर)

गजल- 29

मूँह फेर लोक जहन जाए लगलै
छै भाषण बेकार बुझाए लगलै

घर मन्दिरक सटले बना लेलक जे
सदिखन 'अच्छे दिन' सपनाए लगलै

रोग सेहो सिखलक राजनीति आब
बैद्य बदलल तँ चोट दुखाए लगलै

पुल बनेबाक जहन भेल ओरियान
नदी देलक धोखा सुखाए लगलै

ओना तँ हेमनि धरि निकम्मा छल ओ
खादी पहिरि ठीके कमाए लगलै ❑

(2222222222- बहरे-मीर)

गजल- 30

भेँट ओ अन्हारमे इयाद छौ ने
गप्प ओ पूआरमे इयाद छौ ने

कोन ईस्वी कोन साल कोन मास हम तूँ
एलियै देखारमे इयाद छौ ने

बन्द भेलौ आन जान आब सगरो
गार्जनक फटकारमे इयाद छौ ने

कऽ बहाना मन्दिरक अबै छलेँ तूँ
नवसँ नव सिंगारमे इयाद छौ ने

ठाढ़ तोहर बाट ताकिते रहल के
साँझ धरि पछुआड़मे इयाद छौ ने ❑

(2122 21 21 21 22 सभ पाँतिमे)

गजल- 31

पाखड़ि तऽरक मचान मोन पड़ि गेल
खपड़ा बला दलान मोन पड़ि गेल

तोहर हमर पिरीत भेल अनघोल
पीठक पड़ल निशान मोन पड़ि गेल

तोरा रसिक निहारि बाजि देलक ई
भादव बहय बलान मोन पड़ि गेल

भुखले दिवस खटैत फेर बीतल तँ
गामक अपन नवान्न मोन पड़ि गेल

तोरे भऽ जिनगियो कटैत ई 'पुष्प'
जातिक मुदा सिमान मोन पड़ि गेल ❑

(2212 121 21221 सभ पाँतिमे, तेसर शेरक पहिल पाँतिक अन्तमे दीर्घकेँ ह्रस्व मानबाक छूट लेल गेल अछि)

गजल- 32

नइ बरछी नइ भाला राखू
अपन मूँह पर ताला राखू

चरि- चरि महल केर घऽर बना कऽ
नइ रस्ता नइ नाला राखू

जा विदेश बड़ मौज उड़बियौ
खाता-बऽही दिवाला राखू

खोलू अनकर कच्चा चिट्ठा
झाँपि अपन घोटाला राखू

शासनमे नइ अन्तर बेसी
बरु लल्लू वा लाला राखू

खूब निहारू कञ्चन-काया
मुदा हाथमे माला राखू ❑

(22222222 सभ पाँतिमे। बहरे-मीर)

गजल- 33

आँखि बजलै ओकर की ठोर बजलै
जहिया बजलै से बहुत जोर बजलै

चान गगनक लगै छै झुझुआन किए
देखि तोरा ई मन चकोर बजलै

इज्जति कृष्णक सोझा लुटलै हम्मर
कलपैत पाँचालीक पटोर बजलै

मुँह कानसँ लागल ओ शरीफ जेना
मुदा लोक नाम ओकर चोर बजलै

बर्गर पिज्जा शहरमे भेटत बहुत
हम नइ भेटब मुदा तिलकोर बजलै ❑

(2222222222 सभ पाँतिमे। दूटा अलग अलग ह्रस्वकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि)

गजल- 34

साँझ रही हम पराती रही हम
तोहर कबूला पाती रही हम

तूँ मूँड़ी झुका बेदी तऽर छलेँ
अक्षत छिटैत बराती रही हम

आइ अन्हरिया नाम हमर अछि
सुन कहियो दियाबाती रही हम

सुरूज घोंटि देवता नइ बनलौं
छी बानरे उत्पाती रही हम

हमरा मतलब छऽल एक तोरेसँ
नइ समाजक अवघाती रही हम

ओ पोथी फाड़ि फेंक देलेँ की
जाहिमे पहिलुक पाँती रही हम ❑

(222222222 सभ पाँतिमे, बहरे-मीर)

गजल- 35

टूटल लेल की रितुराज
हूसल लेल की रितुराज

हमरा आँखि नोरे नोर
दूखल लेल की रितुराज

की नब गाछ की नब फूल
सूखल लेल की रितुराज

पचकल गाल पाकल केश
चूकल लेल की रितुराज

यौवन गान कोना हैत
भूखल लेल की रितुराज ❑

(2221 2221 सभ पाँतिमे)

गजल- 36

राति छोट मुदा पिहानी नमहर केने जो
रंगि मुँह -कान किरदानी नमहर केने जो

तोरा उड़ीस मारैले कहने रहियौ हम
उनटे तूँ मच्छरदानी नमहर केने जो

संगतमे सुर कोनो विवादी लगौ तोरा
तँ गबैयाक ससरफानी नमहर केने जो

भोँटक चन्दा भेटैत रहौ सभ दिस तेँ तूँ
बेचि कऽ तगमा जजमानी नमहर केने जो

तूँ गाँधीकेँ फूल- माला सेहो चढ़ा आ
गोड्से पर खर्चा- पानी नमहर केने जो ❑

(222222222222, बहरे-मीर)

गजल- 37

तोहर देल दाग मोन रहत
टूटल प्रेम-ताग मोन रहत

अनलेँ ओढनीमे झाँपि जे
बथुआकेर साग मोन रहत

गप्प करिते बितै छल कहियो
भरि रातुक जाग मोन रहत

नाओं हमर तोहर अँगना
कुचरैत छल काग मोन रहत

स्पर्शक अबीर लगलौ तोरा
ओइ बरखक फाग मोन रहत

जे दऽ नइ सकलौं तोरा फेर
एकटा उपराग मोन रहत ❑

(22222222 सभ पाँतिमे। बहरे- मीर)

गजल- 38

उघरल खाट छी
उसरल हाट छी

क्यो ने जाय छै
बिसरल बाट छी

खुट्टा ठाढ़ छै
भसकल टाट छी

भुखले भोजमे
अन्तिम लाट छी

सगरो मैल हम
पोखैर घाट छी ❑

(22212 सभ पाँतिमे)

गजल- 39

के की कहलक की कहू
के की ठकलक की कहू

हमरो उजरे रंग छऽल
के की दगलक की कहू

भेलै साधू आब सभ
के की चिखलक की कहू

माया बड़का पैघ ई
के की रचलक की कहू

अखनो नै छी पास हम
के की जँचलक की कहू ❑

(2222212 सभ पाँतिमे)

गजल- 40

गप्प उठतै तँ पहुँचबे करतै
मेघ लगतै तँ बरसबे करतै

ओकरा रोकि सकत नै केओ
गीत रचतै तँ परसबे करतै

पाप आ पुण्य कथी नइ बूझै
भूख लगतै तँ भटकबे करतै

छै अभिव्यक्तिक हक सभकेँ तेँ
दम्म फुलतै तँ खखसबे करतै

छै उमेरक गलती चालिक नइ
डाँड़ हिलतै तँ लचकबे करतै ❑

(2122 112222 सभ पाँतिमे)

गजल- 41

ठोर छै जीह छै दाँत नै छै
पेट छै भूख छै भात नै छै

सूर्य एगो गरीबक बनेबै
खून छै घाम छै प्रात नै छै

हम तँ छी लोक ओहेन मीता
स्नेह छै प्रेम छै घात नै छै

माँग सेनूर के देत ओकर
बोल छै ज्ञान छै गात नै छै

जे रहै छै करेजाक भीतर
चुप्प छै दूर छै कात नै छै

मञ्च चिट्ठी किए देत तकरा
शब्द छै शिल्प छै तात नै छै ❑

(212 212 2122 सभ पाँतिमे)

गजल- 42

गहूमक बीच जेँकल मड़ुआक बोरे जकाँ
छी मैलमूँह हमहूँ लोक छी तोरे जकाँ

दूगो बोली सिनेहक लागै नीक हमरो
गप्प अपमानक लागै छै अँगोरे जकाँ

टूटै छै तँ नै जूटै छै ई बिन गिरहकेँ
प्रेम हमरो छै तन्नुक अनमन डोरे जकाँ

हमरा भरोस संतोषक सुख पर हरिदम
अखरे फुटहो लगै छै तिलकोरे जकाँ

मनुक्ख मनुक्खक कऽरत नै सम्मान जँ कत्तौ
शोणित हमरो छै धिप्पले इनहोरे जकाँ ❑

(222222222222 सभ पाँतिमे। दूटा अलग अलग ह्रस्वकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि)

गजल- 43

नै भेटबौ हम किछु कालक बाद
तकिहेँ सभ ठाम किछु सालक बाद

तूँ पूछिहेँ सभ सँ जरलै कहिया
एगो घऽर रहै जे टालक बाद

बिन तोहर जिनगी ठमकल एना
जेना बन्द मिल हड़तालक बाद

हम मूँहे तकैत रहलौं सबहक
सभ उठि गेलै हाल चालक बाद

काजक बाद हम छी पड़ल अनमन
के पूछै पुष्प निर्मालक बाद ❑

(222222222 सभ पाँतिमे। दूटा अलग अलग ह्रस्वकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि)

गजल- 44

बाड़ीमे चान उगैत हेतै गाममे
बसमतिया धान पकैत हेतै गाममे

केओ नूआक महीन घोघट काढने
खुदरा मुसकान बँटैत हेतै गाममे

फेरो कोनो नव खेत निहुटा मोहना
चखना जलपान करैत हेतै गाममे

नवका चूड़ाक सुगन्ध पसरल छैक तेँ
पावनि लेबान अबैत हेतै गाममे

मुरही कचड़ीक सुआद मीता भेटतौ
चऽरमे दोकान सजैत हेतै गाममे ❑

(2222 1121 22 212 सभ पाँतिमे)

गजल- 45

हरलौं दुख लाचारी हम
जा रहलौं कठियारी हम

अचिओपर देबै भाषण
मुर्दा छी सरकारी हम

कीनल नव खादी कफ्फन
खूनक कय पैकारी हम

आतंकक करबै अन्त
आतंकक भैयारी हम

आनक गोत्रे गड़बड़ छै
अगबे छी संस्कारी हम ❑

(2222222 सभ पाँतिमे, बहरे- मीर)

गजल- 46

अपनहिसँ अपना ऊपर पाग-माला चढबैत रहल
लोक थोपड़ी पिटैत रहल ओ गाल बजबैत रहल

स्वर्ग महापात्रकेर झोड़ीसँ निकलि आबै कहुना
बेचि निज खेत- पथार ओ पितृऋण सधबैत रहल

यौ ओ अगुआ बनल छै बिना लोभे से नै कहियौ
जे सलामी नै देलक ओकर नाम हटबैत रहल

नारा गरीब मजदूरक हितमे लगा -लगा हरिदम
ओ नेताजी चल-अचल अपन नित- दिन बढ़बैत रहल

मँगलियै हम ओकरासँ ओकर पाँच सालक हिसाब
ओ बस निन्दाक पोथी अनकर पढ़ि-पढ़ि सुनबैत रहल ❑

(बहरे- मीर)

गजल- 47

संकटमे तूँ तँ छेँ ढाल हमर माए गे
जिनगी तोरेसँ नेहाल हमर माए गे

तोहर कोराक समतूल भऽ सकतौ कथी
स्वर्गो बिन तोर जंजाल हमर माए गे

कखनो भेलै जँ ई मूँह कननमूँह सन
लड़लेँ दुनियाँसँ विकराल हमर माए गे

जनमल रहियै तँ हम बौक बहीरे रही
सीखल तोरेसँ सुर ताल हमर माए गे

हम जीवनकेर सभ कोण बना ली सहज
ममता छौ तोहर परकाल हमर माए गे ❑

(2222 1221 122 12 सभ पाँतिमे)

गजल- 48

नइ छूटत विकट अधकपारी हमर
छौ तोहर निशानी बिमारी हमर

तूँ मीता हमर छेँ कि दुश्मन बता
गे डहकन लगौ छौ नचारी हमर

हमर नीन्न आ चैन आपस कऽ दे
तोरे संग लागल उधारी हमर

तूँ लेऽ मोन माफिक मजा जीवनक
जगले राति काटब लचारी हमर

देखब नैन भरि ई मनोरथ रहल
रहलै प्राण रकटल भिखारी हमर ❑

(2221 221 221 2 सभ पाँतिमे)

गजल- 49

दाम घटतौ तोहर मोल लेल तरसबेँ
बनबेँ इतिहास भूगोल लेल तरसबेँ

आइ कऽ ले भरि मोन तूँ अनदेखी हमर
दिन एतै तूँ हमर बोल लेल तरसबेँ

डीह -डाबर बेचि कऽ बसबेँ मेट्रोमे तँ
बाड़ी बला नेबो-ओल लेल तरसबेँ

चल होटलेमे कऽ ले तूँ मूँड़न- बियाह
मुदा सुन पिपही-ढ़ोल लेल तरसबेँ

तूँ अँगनोमे झाड़बेँ भाषा विदेशी
तँ देख मैथिली अनमोल लेल तरसबेँ ❑

(22222222222- बहरे-मीर)

गजल- 50

एगो नव कली कमल लीखि रहल छी
तोरा देखि हम गजल लीखि रहल छी

छौ सोनाक मोन चानीक नजरि
छी तोहर बहुत खऽगल लीखि रहल छी

केओ किछु कहय फिकर नइ हमरा अइ
हम अपना दिलक कऽहल लीखि रहल छी

कोना स्वप्न केर खिस्सा कहि सकबौ
गुनधुनमे पऽड़ल पऽड़ल लीखि रहल छी

जादू कोन भेल तोरासँ पता नइ
बिन पीने नयन चढ़ल लीखि रहल छी ❑

(222121221122 सभ पाँतिमे। दोसर शेरक पहिल पाँतिमे अन्तिम ह्रस्वकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि)

गजल- 51

ई पंचैती हेबे करतै
मुद्दे अन्दर जेबे करतै

जे करतै दरबारी बढ़ियाँ
ओ मलपूआ खेबे करतै

नेता बनलै टाका बाँटि कऽ
खर्चा-पानी लेबे करतै

लगुआ- भगुआ हमरो एतै
चरण- वंदना गेबे करतै

नाओं विकास कुमार जखने
झूठ आँकड़ा देबे करतै ❑

(22222222, बहरे- मीर)

गजल- 52

अदहा लक्ष्मी हम अदहा वाणी
हम छियै पप्पाक दुलरी रानी

मम्मी कहै हमरा सोनबेटी
मैंया खातिर दुर्गा महरानी

दूध- भात बनि खेलै छी हमहूं
आनी मानी हम किछु नै जानी

कुरकुरे मैगी चिप्स आ पापड़
सभ दिन भोरे चाही जलपानी

पिपनी पर हमर नोर राखल छै
रुस्सा-फुल्लीक हम बहुत ज्ञानी

जे केओ हमरा मारत तकरा
बाबा दऽ देथिन कालापानी ❑

(222222222, बहरे-मीर)

गजल- 53

दूगो बोली सिनेहक पाबऽ दियौ भाय
थोड़े हमरो दिस रौद आबऽ दियौ भाय

बड्डु थोपड़ी बजेलौं अहाँकेँ सुनि हम
आब हमरो तँ किछुओ सुनाबऽ दियौ भाय

बेटी सबहक छै देवी दुर्गे समान
तेँ सितियोकेँ सीता बनाबऽ दियौ भाय

ई कोटा कानूनक हटतै पक्का
कनि बाबाकेँ बिष्ठी लगाबऽ दियौ भाय

छै सभ शोणित एके रंग टुहटुह लाल
ई कहुना गिरहतकेँ बुझाबऽ दियौ भाय ❑

(22222222222 सभ पाँतिमे। दूटा अलग अलग ह्रस्वकेँ दीर्ध मानबाक छूट लेल गेल अछि)

गजल- 54

हमरा पियरगर लगै देल तोहर दरद
सत्ते निमनगर लगै देल तोहर दरद

तूँ फूल तूँ चान तूँ इन्द्रधनुषो मुदा
बेसी रमनगर लगै देल तोहर दरद

की नोत की भोज की माँछ की पान गे
खुब्बे सुअदगर लगै देल तोहर दरद

हरिमोहनक संग गोनूक खिस्सा पढ़ल
तैयो चहटगर लगै देल तोहर दरद

देलक कतेको अपन मीत सुच्चा जखम
सभ मे जबदगर लगै देल तोहर दरद ❑

(221 221 221 221 2 सभ पाँतिमे)

गजल- 55

नव कनिआँ जकाँ लगै छी अहाँ
दुल्हिनियाँ जकाँ लगै छी अहाँ

छै बैकुंठ तुच्छ बेकार सन
लछमिनियाँ जकाँ लगै छी अहाँ

हेतै डर कथी बयसकेर जौं
दिलजनियाँ जकाँ लगै छी अहाँ

ई मुस्की बनल रहै एहिना
मोहनियाँ जकाँ लगै छी अहाँ

होइत भोर जगमगा दी हिया
किरिनियाँ जकाँ लगै छी अहाँ

जादू टोन सीखि लेलौं कहिया
धैमिनियाँ जकाँ लगै छी अहाँ

सुख दुख बाँटि खाय हमरा जरे
सौजनिआँ जकाँ लगै छी अहाँ ❑

(2221212212 सभ पाँतिमे। पाँचम शेरक दोसर पाँतिक पहिल ह्रस्वकेँ दीर्घ मानल गेल अछि)

गजल- 56

पढ़ल पण्डित मुदा रोटीक मारल छी
बजै छी सत्य हम थोंथीक हारल छी

बुझू कोना सभ सँ काते रहै छी हम
उचितवक्ता बनै छी तेँ तँ टारल छी

दियादे के घरक घटना मुदा धनि सन
कटेबै केश कोना हम जँ बारल छी

मधुर बनबाक छल भेलौं जँ अधखिज्जू
तँ हम नोनगर लाड़ैनें सँ लाड़ल छी

लगै छल नीक नाथूराम-के पोथी
मुदा गाँधीक साड़ा संग गाड़ल छी

किओ ने पूजि रहलै कोन गलती यौ
बिना सेनूर अरिपन 'पुष्प' पाड़ल छी ❑

(1222 तीन बेरि सभ पाँतिमे। बहरे हजज)

गजल- 57

दिन दुर्गापूजा छठिकेर गानि रहलै
सून घरमे एगो बुढ़िया कानि रहलै

छै छुट्टी अखन नै पूत एतै कोना
आहटि डेगक तैयो ओ अकानि रहलै

भात दिनके फेरो खेतै सूति रहतै
यैह जीवनक सत्य छै ओ मानि रहलै

मुँह देखत कहिया छै सेहन्ता लागल
पोता दौगैत हेतै ओ जानि रहलै

जकरा लेल रणे- बने छल बौआएल
वैह बेटा कसैया नै गुदानि रहलै ❑

(22222222222 सभ पाँतिमे। बहरे- मीर)

गजल- 58

देखि केकरो उठैए धुकधुकी
चोट पुरने सहैए धुकधुकी

लोक सोझा हँसैए जोरसँ
पाबि असगर कनैए धुकधुकी

छोड़ि देलौं नगर जे हारि हम
जा कऽ ओतै बसैए धुकधुकी

नोट दूटा भऽ जाए गाँठमे
जी हजूरी करैए धुकधुकी

जोश रूदल बऽनत तकरे रहै
भेल बिपटा नचैए धुकधुकी ❑

(2122 122 212 सभ पाँतिमे। दोसर शेरक पहिल पाँतिक अन्तिम लघुकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल अछि)

गजल- 59

के मुद्दै के मीत चिन्हब भारी भेल
के वैरी के हीत चिन्हब भारी भेल

बाहरसँ सभ पाकल टुह-टुह गोपी आम
के भीतरसँ तीत चिन्हब भारी भेल

पहिरि कऽ माला देखू सभ जन नाचै छै
केकर असली जीत चिन्हब भारी भेल

के दाता के रैयत सबहक गति समान
छोड़ै नै दू बीत चिन्हब भारी भेल

जकरे खाय तकरे गारि दै ढाकी भरि
मिथिला देशक रीत चिन्हब भारी भेल ❑

(22222222222 सभ पाँतिमे। बहरे-मीर)

गजल- 60

अचके लऽ जाय दूर ई जिनगी
केहेन छै निठूर ई जिनगी

तकिते रहत अहाँक नैना आ
सपना कऽ देत चूर ई जिनगी

केओ अपन जँ संग छोड़ै छै
जानक लगै जबूर ई जिनगी

ककरा कहब कठोर कत्ते ई
छै लैत सूद मूड़ ई जिनगी

सभकेँ तहस नहस करै पलमे
सबहक बनल हजूर ई जिनगी ❑

(2212 1212 22 सभ पाँतिमे)

गजल- 61

चान धरतीक निहारि प्रात करी
मिझा कऽ दीप चलू किछु बात करी

नै भूख नै पिआस नै दुख जत्तऽ
सतयुग आनि कऽ कलयुग कात करी

चलतै गप्प नै मजनूँ राँझाक
अहाँ दी संग सभकेँ मात करी

पहिया जिनगीक ससरै एना कि
हम धान लाबी अहाँ भात करी

प्रेम पूजा बनल पुष्प एहेन
छू कऽ बगूर हम बेलपात करी ❑

(222222222 सभ पाँतिमे। दूटा अलग- अलग ह्रस्वकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि)

गजल- 62

गाछी मोनक सुड्डाह भेलै
जिनगी सेरायल चाह भेलै

हम शोणित जकरा दान देलौं
ओ नोंतक नीपरबाह भेलै

हम्मर छै झरकल चान सत्ते
सुरुजो अनमन सीयाह भेलै

हम ककरा बुझियै हीत जगमे
सभ हीतो जन फुसियाह भेलै

जे हेमैन धरि कण्ठी लऽ बूलल
ओ माँछक बड़ हबकाह भेलै ❑

(222222122 सभ पाँतिमे)

गजल- 63

बिर्रो सन सन बहै जमुनबोनीमे
देहो थर थर कँपै जमुनबोनीमे

रहै हिम्मत ककरा जेतै माँझमे
साँझे राकस नचै जमुनबोनीमे

आइ धरि नै छोड़लकै ओ डैनिया
भोरे चिलका कनै जमुनबोनीमे

होइ जँ अन्हरिया अमावस्या केर
गाछमे गाछ सटै जमुनबोनीमे

साधल जाइ मसानी डेग डेग पर
केओ भगतै गबै जमुनबोनीमे

लहास गन्ध करै झुण्ड गिद्धक बिकट
मूँड़ीकट्टा अबै जमुनबोनीमे ❑

(2222222222 सभ पाँतिमे। दूटा अलग अलग ह्रस्वकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि)

गजल- 64

धरमक ई बात कात कर तूँ
अप्पन मतलबक बात कर तूँ

कुरसी भेटौ अबैत मातर
तै दल दृष्टिपात कर तूँ

जे आगू आबि मीत बनबौ
तकरे पाछूसँ घात कर तूँ

गोटी सुतरौ सहज तरीके
गदहोकेँ श्रेष्ठ तात कर तूँ

अवसरपर पुष्प काट एना
विषधरकेँ आब मात कर तूँ ❑

(2222 121 22 सभ पाँतिमे)

गजल- 65

दिनचर्या छोट छै
दरमाहा मोट छै

हमरा गंजी मुदा
बाबाकेँ कोट छै

रैला रैली बहुत
लगलेमे भोँट छै

मिथिला ओकर किए
जकरा लंगोट छै

शोभै छै पाग नै
मूँहेमे खोट छै

गजले बेकार छै
बड़ कसगर चोट छै ❑

(222212 सभ पाँतिमे)

गजल- 66

इयाद तोर जगबैत रहल राति भरि
इजोर मोन जरबैत रहल राति भरि

जै भरोस पर दिन कटैत रहलौं हम
वैह भरोस कनबैत रहल राति भरि

केलौं बड़ मना नै मानलक बसात
गीत तोरे सुनबैत रहल राति भरि

अनेरे दोष मेघकेँ दैत रहलौं
नोर सिरमा भिजबैत रहल राति भरि

एतै भूकम्प भोरे जनितो पुष्प
मूर्ति माटिक बनबैत रहल राति भरि ❑

(2222222222 सभ पाँतिमे। दूटा अलग अलग ह्रस्वकेँ दीर्घ मानल गेल अछि)

गजल- 67

फेरो स्वप्नक गप्प बढ़ा रहल छी
एगो नवका स्वर्ग बना रहल छी

बौआ माइक प्राण लऽ लेलकै जे
तै डाक्टरकेँ चाह पिया रहल छी

छाती रहतै बेस बनल सकतगर
दूधक डिब्बा हम तँ चला रहल छी

पहिलुक बेटीमे हम बेचलौं खेत
दोसरमे ई डीह हटा रहल छी

ओ अप्पन कहियो नइ भेल हम्मर
हर्जे की हम हाथ मिला रहल छी ❑

(22222112122 सभ पाँतिमे। चारिम शेरक पहिल पाँतिक अन्तिम ह्रस्व छूटक तौरपर लेल गेल अछि)

गजल- 68

शब्दक बलपर नाओं कमेबै हम
जा धरि जीबै गजले सुनेबै हम

लगतै जातिक धर्मक पसाही जौं
चूआ शोणित अप्पन मिझेबै हम

जे जनमल मिथिलाकेर सीमामे
सुच्चा मैथिल सभकेँ बनेबै हम

हेतै सबहक मैथिलि बरोबरि सन
छवि सतरंगा अनमन सजेबै हम

छै सगरो जागल आब मैथिल जन
लड़ि अधिकारो अप्पन लऽ लेबै हम ❑

(2222221222 सभ पाँतिमे)

गजल- 69

नेता कपरगर छै
सत्ता पिअरगर छै

खन लेफ्ट खन राइट
टाका असरगर छै

मनसा बबाजी छै
मौगी जबदगर छै

बेटी अबोधे छै
पाहुन उमरगर छै

राखल कनै डिग्री
कोटा तगदगर छै

दुब्बर महादेब
पंडा ललितगर छै ❑

(221 222 सभ पाँतिमे। अन्तिम शेरक पहिल पाँतिक अन्तिम स्वर दीर्घ मानल गेल अछि)

गजल- 70

बेसी छै सुतले जागल क्यो क्यो
बेसी छै काँचे पाकल क्यो क्यो

गप्पक नमहर छै काजक छोट
बेसी छै बसहे नाँथल क्यो क्यो

बाबू बल पर आ भैया बल पर
बेसी छै भगते मारल क्यो क्यो

जकरा देखू से खादीमय छै
बेसी छै नेते बाँचल क्यो क्यो

गजलक मदिरा बड़ भावै सभकेँ
बेसी छै पीने माँतल क्यो क्यो ❑

(222222222 सभ पाँतिमे। दोसर शेरक अन्तिम लघुकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि)

गजल- 71

हम्मर फाँटक भगवान रहय
केओ अप्पन सन आन रहय

छी अखनो डूबल मातल हम
ओ नैना नइ मदपान रहय

सपना मोनक टूटल सभ टा
जहिया ओकर फलदान रहय

छै बँचले पेटीमे रखले
ओ चिट्ठी जे पहिचान रहय

ने अर्जुन हम ने गाछ चिड़ै
हमरो नमहर खनदान रहय ❑

(22 22 22 11 22 सभ पाँतिमे)

गजल- 72

भूखे बच्चा जकरा मरैत हेतै रौ
कोना कविता तकरा बनैत हेतै रौ

जयकारा देतै लोक पेट बान्हल जे
तकरा सपनो भाते अबैत हेतै रौ

छी हम छेना बेचैत देश भरि तैयो
हमरे माए मुरही फँकैत हेतै रौ

की झूठ्ठे चन्ना सुरुज नीक लगतै कह
घरमे जौं डिबियो ने जरैत हेतै रौ

चैतेमे बऽर मरि गेल जै कनियाँक
ओ चैताबरमे की गबैत हेतै रौ ❑

(222 222 121 222 सभ पाँतिमे। अन्तिम शेरक पहिल पाँतिक अन्तिम ह्रस्वकेँ दीर्घ मानल गेल अछि)

गजल- 73

पीआरक सीजन हिट भऽ गेल
पागो धोतीमे फिट भऽ गेल

बहलै सगरो लवमय बसात
देसी कलचर एक्जिट भऽ गेल

छौंड़ा छौंड़ी बनलै भजार
जे नइ सेहो परमिट भऽ गेल

नबका नबका गिफ्टक लगान
टाका टोटल डेबिट भऽ गेल

पीयो फेंको भेलै पिरीत
बिजनिस अजुका डिफनिट भऽ गेल ❑

(222222121 सभ पाँतिमे)

गजल- 74

जकरा दुख छै तकरा दुख
ढ़ाकी भरि-भरि हमरा दुख

जखने ताकू भदबा छै
पोथी दुख आ पतरा दुख

सोल्कन बाभन भोगै छै
पिछड़ा दुख आ अगड़ा दुख

कानै छै मोटू-पतलू
नकदी दुख आ खुदरा दुख

नवकीकेँ भेटत सदिखन
मेकप दुख आ कपड़ा दुख

ककरो कनबै सतमहला
ककरो खऽर आ खपड़ा दुख ❑

(2222222 सभ पाँतिमे)

गजल- 75

प्रीत केर विकास तोहर ओलतीमे
अतमाक हुलास तोहर ओलतीमे

मीठ मीठ नजरिसँ तूँ जेना चिखेलैं
अमिरतीक मिठास तोहर ओलतीमे

दाँत काटि पटोर जादू कोन केलैं
गुम्म भूख पियास तोहर ओलतीमे

लाल रंग बियौहतीमे झूमि रहलौ
कोबरक इतिहास तोहर ओलतीमे

तूँ हमर मन केर मलिकाइन जँ बनलैं
'पुष्प' हैत लहास तोहर ओलतीमे ❑

(2121 121 22 2122 सभ पाँतिमे)

गजल- 76

अनचोक्के हमर जे हेरा गेल चान
ठकहरबा जगतमे पेरा गेल चान

बहुतो दूर ठीके जैतै ओ कहू तँ
घूँघटमे अनेरो घेरा गेल चान

बापक बोझ भेलै कन्यादान आब
बसिया चाह सन तेँ सेरा गेल चान

दैबक नाचमे भेटल ढोलकक काज
जखने चोट पड़लै टेरा गेल चान

कहियो पाँजमे सूतल छल निन्न भेल
सेहो आब 'पुष्प'सँ डेरा गेल चान ❑

(2221 2222 2121 सभ पाँतिमे)

गजल- 77

मीत जखन ओ आन भऽ गेलै
दैब रचल सभ ज्ञान भऽ गेलै

तेल लगेलौं धोधिबलाकेँ
पेट भरल मुख पान भऽ गेलै

नोट लगा ओ भेल तँ नेता
देह सजल दोकान भऽ गेलै

देख हमर खाली सन बटुआ
दूर गगनमे चान भऽ गेलै

जान गमा की 'पुष्प' कऽ लेतै
प्रेमक जगमे टान भऽ गेलै ❑

(211 222 11 22 सभ पाँतिमे)

गजल- 78

जहिया अहाँ आन हेबै
परिबा बला चान हेबै

बनतै हमर प्रीत खखरी
अनकर अहाँ धान हेबै

जौं आन सेनूर देलक
यै हम तँ निष्प्राण हेबै

हेतै लिखल भोगबै हम
थानाक जजमान हेबै

प्रेम तँ अमर करबे करत
हम 'पुष्प' बलिदान हेबै ❑

(2212 2122 सभ पाँतिमे)

गजल- 79

राति-के सपना बनल छेँ चान तों नव
तालमे लय बनि मिलल छेँ गान तों नव

पूर अंकक छेँ कि तों अधपूर अंकक
दस दशमलवमे लिखल छेँ मान तों नव

मौध मिसरी माँछ-के जयबार भेलेँ
सोमरस-के प्रिय तरल छेँ पान तों नव

भैरवी मल्हार-के समवेत गायन
मालकोशक रागमे छेँ तान तों नव

छेँ पराती आरती आ नामधुन तों
गाम-के गहबर बनल छेँ थान तों नव

नव उमेरक भार छौ 'पुष्प'क नजरिमे
ओसमे कतकी फसिल छेँ धान तों नव ❑

(बहरे रमल, 2122 2122 2122 सभ पाँतिमे)

गजल- 80

किए दू सालमे रधिया सुखा गेलै
रहै गेना कथी अमती बना गेलै

लगै बापे सनक अनमन मरद ओकर
दहेजक पेट सेहन्ता बिला गेलै

अजोहेमे कमौआ पूतकेँ पदबी
मुदा नेनपन कौड़ीमे बिका गेलै

बचाकेँ बाप देलक कऽलम आ गाछी
नशाखोरीसँ ओ सभटा लुटा गेलै

लऽ जाऊ शिव अपन पुरना धनुष जल्दी
सिया लछुमनक संगेमे पड़ा गेलै

दऽ ने सकलै कमीशन घूस नेताकेँ
तऽ लिस्टसँ 'पुष्प' के नामे छँटा गेलै ❑

(बहरे हजज, 1222 तीनबेर सभ पाँतिमे)

छौ कोन बाट ने आइयो तोहर बाट तकैत
छौ कोन फूल ने एखनो तोहर मुस्की सिखैत
केहेन निठूर छेँ तो बदरीमे चान भेल
कलम उगलि देत खून पाँती लिखैत लिखैत

-प्रदीप पुष्प

तोरा हमरासँ पियार नइ, गप्प ई सत्ते।

कहियो कोनो सरोकार नइ, गप्प ई सत्ते।

मुदा जिनगीक बाट पर कहियो भेटबेँ,

तँ लगबेँ अनचिन्हार नइ, गप्प ई सत्ते।

-प्रदीप पुष्प

प्रदीप पुष्प

मूल नाओं- प्रदीप कुमार, जन्म- 23 फरवरी 1982

पिता- श्री हरेराम मण्डल, माता- श्रीमती लक्ष्मी देवी, निवास- ग्राम+पोस्ट : ननौर, वाया- रुद्रपुर, जिला- मधुबनी, पिन- 847411, शैक्षणिक/प्रशैक्षणिक योग्यता- एम.ए (हिन्दी) संगीत प्रभाकर, प्राथमिक शिक्षामे डिप्लोमा, वृति- मध्य विद्यालय, विक्रमपट्टी, खानपुर (समस्तीपुर)मे प्रखण्ड शिक्षक। प्रकाशित पोथी- मोनक देहरि पर (पहिल पोथी, गजल संग्रह- 2020) ..बहुतो पत्र-पत्रिकामे रचना प्रकाशित। अलबम, कैसेट आ मैथिली फ़िल्ममे गीत लेखन। ग्रामीण रँगमचपर अभिनयमे सक्रिय भूमिका। गीत-गायनमे अभिरुचि। नुक्कड़ नाटकमे राष्ट्रीयस्तरपर बिहार टीमक प्रतिनिधित्व। सम्पर्क- 8521925604, 7903496553 Email-pradeep23kumar1982@gmail.com

प्रदीप पुष्पजीक गजल संग्रह आशीष अनचिन्हारक मैथिली गजलशास्त्रक रॉकेट छी। जेना उड़ैसँ पहिने वैज्ञानिक कागजपर रॉकेटक चालि उतारि दै छैथ तहिना शास्त्र सेहो प्रतिभाकेँ माँजि दइए। मुदा मात्र शास्त्रेटा गजलकेँ उत्कृष्ट नै बना सकत, कनी करामाती तँ हुऐ पड़त, आ तइमे बाहरी दर्शनक संगे भीतरी मंथन सेहो जरूरी, आ तइले दिमागकेँ ट्रेनिंग दिअ पड़त आ ओतए कोनो शास्त्र काज नै आएत। आ जे गजलशास्त्रक संग मनकेँ सेहो साधि लेलैथ से छैथ प्रदीप। करामाती छैथ, कहै तँ छैथ जे लगलेमे हीया हारि जेता/मुदा फेर लगले कहै छैथ जे चान नै भेटने डिबिये बाड़ि लेता..!

जँ एहेन गजलकार महाराष्ट्र आ तेलंगानाक सभ गाममे एकहकोटा भऽ जाए तँ किसान हीया हारलाक बाद आत्महत्या नै करत, चान ताकि लेत। आ से ओ रौदीक मारल किसान रौदकेँ तापए लागत, जेना प्रदीपजी बिम्ब देने छैथ। आ से ओ महाजनकेँ जेना कहै छैथ- नै भेटबौ हम किछु कालक बाद/तकिहें सभ ठाम किछु सालक बाद..! आ संगे काजक बाद हलातक बिम्ब निर्मालक पुष्पक हालक संग प्रदीप पुष्प देखबै छैथ। मुदा विरहक गजल छुटल नै छैन, ओकर निशानी केतौ केकरो छुटल छै की? आ से अध-कपारी नै छुटतैन से ओ कहै छैथ।

ई संग्रह धमगिज्जर मचेबे करत आ अपना सभ मनेबो करी जे हिनकर अध-कपारी नै छुटैन जइसँ आर मारते रास गजल सुनबा-ले भेटत। ई गजल सभ गेय अछि आ एकर सीडी जँ बहार हएत तँ ओहो धमगिज्जर मचेबेटा करत। **-गजेन्द्र ठाकुर**

पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

दाम : 200 भा.रू.

9789388811521

मोनक देहरिपर (गजल संग्रह) : प्रदीप पुष्प
पल्लवी प्रकाशन, निर्मली